

①

॥७॥१॥७॥

॥श्रीरामविजयसप्तमेऽध्यायप्रारंभः॥



②

१११॥

श्रीगणाधिपतये नमः ॥ चंडकिर्णो सकुळ मंडणा ॥ अमळकमळदकाक्षारघुनेदना ॥ जळजे
इव जनका जगजिबना ॥ पतितपावना श्रीरामा ॥ १ ॥ विद्वज्जमानसमराळा ॥ कामांतकथ्या
यमलवठळा ॥ अनंतवेशा श्रीभुवनपाळा ॥ दिनदयाकारघुपति ॥ २ ॥ जयजयअविद्या
विपिनदहना ॥ निजभक्तकैशल्या हृदयरत्ना ॥ जगदोथारामुनिजनरंजना ॥ दुर्जन
संजना राधवेशा ॥ ३ ॥ मागेंषष्टमे ध्याईकथना ॥ वशिष्टराम उपदेशुना ॥ मग विश्वामि
त्रगेलाघेउना ॥ यागरक्षणाचेनिकाडे ॥ ४ ॥ भागिरीथितकरुनिस्नान ॥ कौशिकरामलक्षु
मणा ॥ सासुनियाने मबनुष्णना ॥ सत्कामाचरणवेदोक्त ॥ ५ ॥ धनुर्वेदनामंत्र ॥ कोणते
समईकैसंप्रेरावंशस्त्र ॥ तंरामाशिबवद्यंमंत्रशास्त्र ॥ विश्वामित्रउपदेशि ॥ ६ ॥ युध्या
चिनानायुक्तिकळा ॥ विश्वामित्रसांगतांचिसकळा ॥ राधविंजाकठिन्यातेवेळा ॥

१११॥

जैरां वळा कर लकिं च ॥७॥ सुति मंत अस्त्र देवता ॥ राम चरणिटे विति माथा ॥ मग हृद
 ई प्रवेश तिल लता ॥ इकिं इक जया परि ॥८॥ पाहा वया श्री रामा चें धैर्य मानसा ॥ विश्वा
 मित्र हणेत्या समयास ॥ यणे मार्गै रूषि गेले सिध्दाश्रमास ॥ ताटिकेने त्यां सभ क्षिते ॥९॥
 येणे मार्गै रघुपति ॥ जाउन ये भय वाटे तें चिति ॥ इ मार्गे चुक उनि लरित ॥ जावें पै सिध्दाश्र
 माते ॥१०॥ जै कतां कौशिका चें वचन ॥ श्री राम बले हस्य वदन ॥ जेणे विश्वा मित्राचे कर्ण ॥
 नस होउनि सुरवावति ॥११॥ स्वामितुम देय कुरुनि ॥ माहाकाठ उभा फोडिन बाणि ॥ तेथे
 ताटिके शिकोण गणि ॥ येच क्षणि मारिनि मि ॥१२॥ कौशिका चें मनि संदेह होला ॥ किं हे वा
 के के वि सुं शलि जातां ॥ या संशया विमुक्त कथा ॥ राम वचने विसरला ॥१३॥ मगर था वरि
 बैसोन ॥ ताटिके शि पाहात कानना ॥ त्याच मार्गे तिचे जण ॥ जाते जाते ते धवां ॥१४॥ वाव

(3)

॥२॥

वेगे जातस्यंदन ॥ अपारभुमिराकिलिकमुन ॥ जैसंजैकतांहरिकितन ॥ पोपंखंडोनभस्महे
ति ॥ १५ ॥ पुटेदेखितैघोरअरण्य ॥ वृक्षलगलेपरमसघन ॥ बालावयास्यंदन ॥ मार्गपुटेफु
खेनोटे ॥ १६ ॥ रामासह्यणेगांधिनंदन ॥ राघवाहुंताटिकारण्य ॥ आतांयेईठतेधांवोन ॥
वासकादुनिमनुष्याचा ॥ १७ ॥ तोहाकेफेडिकिअकस्मात ॥ जैजैकतांरचकेछतांत ॥ विश्वा
मित्रजाकभयाभित ॥ रक्षिंह्यणेरघवा ॥ १८ ॥ मुळतदशसहस्रांचेबळ ॥ जैशिताटि
कापरमसबळ ॥ पर्वतसांटांविंतिविश्रुत ॥ जैसंडरतियेचें ॥ १९ ॥ तेकुंभकर्णोत्थिभ
गिनि ॥ बहुलविशाकराक्षशिणि ॥ शंकांविशतगोद्विजधरोनि ॥ दोढखातेंरगडित ॥ २० ॥
ताटिकामार्गेजातांसहज ॥ मुखिंघालुनिरगडिगजा ॥ वनोपवनिशोधुनिद्विज ॥ नित्यभक्षि ॥ २१ ॥
सांक्षपें ॥ २२ ॥ प्रेतरकेंबस्त्रेभरलिं ॥ तेआपणाभोवतिवेष्टिलिं ॥ मुनुष्यशिरंकर्णबांधिलिं ॥

बहुलदाटवकिने ॥२२॥ नरशिरां व्याजपादमाळा ॥ श्रौणितें चर्चि तपै गळां ॥ कपाकिंशेंदुरचर्चि
 ला ॥२३॥ बावर झेरि मोकळीया ॥२३॥ द्वादशगां वपसरितें वदन ॥ पांचगावयेकेकस्तन ॥ अ
 गणितराक्षसिसेवेयेउना ॥ रामावीरलोडलि ॥२४॥ सखियांसतरिकाह्मणे तेशणि ॥ यापं
 थें येतमनुष्याचिआणि ॥ नरमोसाचिआजिधणि ॥ तुष्टासदेईननिर्धारें ॥२५॥ विश्वामि
 त्रह्मणे व्यापपाणि ॥ हेरक्षविशाळागनि ॥ अतगजितातिराक्षशिणि ॥ लाटिकेसहितपा
 हंपां ॥२६॥ रामाकाटिकेदंडगवसणि ॥ डोसायाजीकेपुंकिजेअग्नि ॥ किंअकस्मात्तुगवे
 वासरमणि ॥ यामिनिअंतिपुर्वेशि ॥२७॥ शितवोटितांआकर्ण ॥ करकराटघोषदारण ॥ जा
 कासेवेचियोजिलाबाण ॥ प्रक्यचपकेसरिखा ॥२८॥ बाणाचेंअथेचंद्राकारवदन ॥ करिथां
 वत्यावायुचेंखंडण ॥ रामेवोदुनिआकर्ण ॥ सोडिलाबाणतेसर्मई ॥२९॥ रक्षासहितराक्ष

(५)

॥३॥

शिणि॥ मुख्यताटिका हृदयापासुनि॥ छेदुनियडिलितेक्षणी॥ घोषगगनिनसमाये॥३०॥ जालां
प्राणराक्षशिणि॥ ताटिकागर्जितितक्षणी॥ तोद्योशविमानिबैकोनि॥ देवसर्वगज्ञवजिते॥३१॥
हृणलिविर्जेश्रीरघुविरा॥ देववर्षतिसुमनभारा॥ ब्रह्मानंदं विश्वामित्रा॥ रामाकागिबाकेगि॥३२॥
हृणेरविकुळभुषणारघुविरा॥ राजिवनेत्रासकुमारा॥ सुश्रिधनुर्विद्यारामचद्रा॥ आजिम्या
द्रिष्टिदेखिति॥३३॥ जैसेयेकाचनावेकसना॥ काट्यावधिपापं जातिजळना॥ तैसें ताटिके
सहितवन॥ येकाचवाणेखंडीले॥३४॥ नाटिकेभारतेकरेनि॥ असंभाव्यरंगलिमेदि
नि॥ देवदुंदुभिवाजवितिगगनि॥ आकाश्यापपाणि सिधाश्रमा॥३५॥ जैसेवर्षकाळिंगेनेपु ॥३॥
रा॥ तैसेचैकडुनधांबलि रूपेश्वरा॥ समस्तोशिवंदुनरघुविरा॥ भेटताजातातेकाळि॥३६॥
यज्ञमंडपशास्त्रप्रमाण॥ कुंडवेदिकामुमिसाधुन॥ आरदारेअष्टकोन॥ करिति साधुनिविप्रतेकं

॥३६॥

(५A)

सकळ सामग्रि सिध्य करुन ॥ आरंभिता माहायज्ञ ॥ रामाशिष्येण गांधि नंदन ॥ मखरक्षणा
 करिंवाता ॥ ३८ ॥ तुवां ताटिकावधिलिहा समाचार ॥ जैको निधां वतिरजनिचर ॥ परिं
 चिसुबाहुभयंकर ॥ प्रकयथोरकरितिल ॥ ३९ ॥ यालागिं नरविरपंचानन ॥ सांभाकिं बहुक
 डेरदुनंदन ॥ परमकमटिराक्षसजापी ॥ पर्वतशिळाटाकितिल ॥ ४० ॥ श्रीरामहृष्येण माहाऋषि ॥
 तुह्मिचिंता नकरा विमानशि ॥ शिक्षाठविण उतांताशि ॥ विश्वकृतआलिया ॥ ४१ ॥ जैको
 निश्रीरामचेंवचन ॥ उल्हासेलं ऋषिज्ञे मन ॥ मगदिक्षाग्रहण गांधिनंदन ॥ आरंभकरि
 यज्ञाशि ॥ ४२ ॥ जैशिंशशिवेष्टिततारांगण ॥ किंमि त्रवेष्टितजैशिंकिणै ॥ तैसाऋषिवेष्टित
 गांधिनंदन ॥ कुंजासहितविलसे ॥ ४३ ॥ ओंकारासहितस्वाहाकार ॥ अवदानेठाकितिल
 सत्वर ॥ उटिला मंत्राचागजर ॥ वषट्कारघोषयै ॥ ४४ ॥ लोअस्तागेलवासरमणि ॥ दोनप्र

5

॥४१॥

हर जालिर जनि ॥ पिशितासन आले धावे नि ॥ तटिके च्याकै वारे ॥ ४५ ॥ विसकोटिर जनि च
रा ॥ मुख्यसुबाहु असुर ॥ सिध्दश्रमा समिप सत्वर ॥ हाक फोडित पातले ॥ ४६ ॥ हाक बैकोनी
दासण ॥ भयाभित जाले ब्राह्मण ॥ गळत हातिचे अवदान ॥ वहनि बोबडि वळतसे ॥ ४७ ॥ ह्यण
तिरक्षिरीक्षि रघुनंदन ॥ नरविरश्रेष्ठ गौविप्रपाकण ॥ श्रीराम ह्यणे वो ब्राह्मण ॥ चिंताका
हिन करावि ॥ ४८ ॥ येक ह्यणे ब्राह्मण ॥ रक्षणाराम बाणिलक्षुमण ॥ पर्वताकार राक्षस सं
पुर्ण ॥ विसकोटि पातले ॥ ४९ ॥ येक दारे हेरक्षिति ॥ राड्यदारे राक्षस सं चरति ॥ कैशि होई क
अंति गति ॥ पळवया वावपे नोहिं ॥ ५० ॥ विश्वामित्र ह्यणे स्वस्त करामन ॥ मानवन के रघुनंद
न ॥ पुराण पुरुष आदि नारायेण ॥ राक्षस वधा अवतरला ॥ ५१ ॥ तों पर्वत बाणि पाषाण ॥ य
शमंड्या वीर पडलिये उन ॥ हाक फोडि ती दासण ॥ रघुनंदन काय करि ॥ ५२ ॥ कोदंड बोदुनि आकर्ष ॥

॥४१॥

5A

सोडिबाणापाटिबाण॥ राक्षसंविशिरें करचरण॥ तरतयं तुटताति॥ ५३॥ राक्षसपरमअलुर्बे
 कि॥ जेहिंसुरांचेमुगुटपाडिलेत्किं॥ हाकादेतिअंबरकिं॥ यज्ञमंडपवेष्टिता॥ ५४॥ एकउ
 उतिअंबरिं॥ प्रेतेशकितियज्ञमंडपावरिं॥ मगरद्योतमअयोध्याविहारिं॥ सर्वदोरिं व्या
 पक॥ ५५॥ तिकडेति केडेरघुनंदन॥ अरदोरंअष्टकोन॥ अष्टदिशा॥ व्यापुन॥ सोडिबाण
 श्रीराम॥ ५६॥ मंडपाचियाककसावरिं॥ उभारामकोदंडधारिं॥ बाणाचाप्रज्ञव्यतेअवसरिं॥
 चहुकडुनिपाडित॥ ५७॥ रामसपअसंख्यात॥ यागमंडपापुटेवेष्टित॥ बाणाचापुरवर्षत॥ सं
 कारहोतअसुराचा॥ ५८॥ मंडपावरिबाणिसवालें॥ सर्वव्यापिलेरघुनाथें॥ तिकडेवावयापु
 रलें॥ रामाविणस्थकनसे॥ ५९॥ तुणिरांतुनकितिवोडिशर॥ शेषासत्याचानककेपार॥ कि
 लेंस्वकापासुनिअक्षरे॥ साचार॥ कितिनिघतिककेना॥ ६०॥ मुखांतुनशब्दनिघति॥ त्याचि

(6)

॥५॥

नक्वेचि जैशि गणति ॥ किं मेघ धारा वर्षति ॥ नाहि निति तयांशि ॥ ६१ ॥ किं माहा कवि चिपद्य
स्वना ॥ किलि जाळि हे कवेना ॥ कि कुबेर भां शरि चि गणणा ॥ कहां कवेना कोणातें ॥ ६२ ॥ मे
रुपायारैरन्नखाणि निश्चि ति ॥ त्यां तु नरत्वे किति निचति ॥ किं पृथ्विवार रूपां कुरु कुरु ति ॥
नाहि गणति तयांशि ॥ ६३ ॥ कि शास्त्रां समवेत अनेक अर्थ ॥ बुद्धि वेळं करि ति पंडित ॥ तैसे रा
मबाणाशि नाहि अंत ॥ तुणिरनिश्चि परिता नके ॥ ६४ ॥ मेघ समुद्र जळनेतां ॥ पारितोरिता
नके तत्वतां ॥ कि विष्णु महिमा वर्षितो ॥ नसर सर्वथा कल्पति ॥ ६५ ॥ तैसा उणा नके तुणि
रा ॥ कोट्यानु कोटि नीघति शर ॥ तोहति राक्षसां चो संकार ॥ समरथिर श्री राम ॥ ६६ ॥
विसकोटि राक्षसदे स्व ॥ येक लाराम अयोध्या नायक ॥ परिते मगेंद्रा वरि जंबुक ॥ अपारजै ॥ ६७ ॥
सेपातले ॥ ६७ ॥ कि दंद सुक मिळे न अपार ॥ धरु आले स्वगेश्वर ॥ प्रळय अग्नी वरि पंतंगकार ॥

69

विद्मवावयाशंपावलि ॥ ६८ ॥ किं बहु तमि कोन ख द्योत ॥ धरं ह्यण ति आदि त्य ॥ किं श ल भ मि को
 निसमस्त ॥ माहा मेर उ च लु ह्य ण ति ॥ ६९ ॥ ये क ल चि फार श धर ॥ परि अ व नि के ली नि वै र ॥ ये
 के ले नि न र सि के सं भा र ॥ दै त्य पु र्वि आ रि के ॥ ७० ॥ आ सो रा क्ष सां च्या रा खे आ न्या ॥ रा मे शु लिंग
 शि स म र्पि न्या ॥ म रि चि सु बा हु ले वे ष ॥ ग रा ये उ नि धा वि न्ब ले ॥ ७१ ॥ रा मे का ढि ला नि र्वा ण बा
 ण ॥ द्या श र मु रि वि सु र्य सु न ॥ सु बा हु चा कं ट ल क्षु न ॥ के लं सं धा न रा ध वे ॥ ७२ ॥ जै सा वि ह ग म वे
 गे क र न ॥ दृ ष्टिं धां वे फ क् दे खे न ॥ तै सा म वे गे ला बा ण ॥ शि र उ उ वि ले सु बा हु चे ॥ ७३ ॥ त्या
 बा णा चा पि सा रा कि चि त ॥ म रि चि स ला ग ला अ क स्मा त ॥ त्या श र वा ले अ द्रु त ॥ म रि चि
 उ डे न गे ला पै ॥ ७४ ॥ कि र्वे गे श्व रा वे फ उ ल्का रि ॥ अ न्न क उ डे न जा ति दि गं तरि ॥ तै सा म
 रि चि स मु द्र मि त रि ॥ जा उ नि यां प डि ये ला ॥ ७५ ॥ पर म हो उ नि भ्र मि त ॥ लं के शि गे ला था

४

॥६५॥

केपळत॥ वाटेपाटि लाग लाखु नाथ॥ पर तो न पाहा त घडि घडि॥ ७६॥ लंके तराक्षस प्रवेशो
ना॥ राक्षसेंद्रास सांगे वर्तमान॥ ह्यण मानव न केरु नंदन॥ आहियुत्त षडव तर का॥ ७७॥ अब
घाबै को निरतांत॥ रावण दचकला मनात॥ जैसे सुपर्णा बाबै कतां पुरुषार्थ॥ सर्प बहुत सं
तापति॥ ७८॥ किबै को नि संताचें स्तवन॥ मनात कष्टि होय दुर्जन॥ किपति रते चाधर्म प
रिसो न॥ विभि चारिणि विटति॥ ७९॥ असे सकळ आदु निरज निचर॥ सिथ्था श्रम वासि
रण रंग धिर॥ रण मंडळि रघु विर॥ कैसा येकला जो फला॥ ८०॥ जैसे माहा कर्मी सर्व स
रे॥ मग येकलें पर ब्रह्म उरे॥ किस मस्तक पडुनि क्षे त्रे॥ येकला दिन कर उगवे जैसे॥ ८१॥
जैशिरात्र निरसता उटे जाण॥ तैसे यज्ञ मंडपां लुनि ब्राह्मण॥ पेटति रामा शिधां वोन॥ ब्र
ह्मानंदे करोनियां॥ ८२॥ किं सुक्ति वेगळे मुक्ता फळ॥ दिसे जैसे परम ते जाळ॥ कि प्रपंच त्यागें निर्मळ॥

॥६५॥

योगेश्वरविलसेजेवि॥ ८३॥ जटरिंअन्नपाकहोयवेगे॥ परिगर्भाशिठकानलागे॥ किज्ञा
 निवेष्टिततापत्रयभोग॥ परिअंतरनभंगेसर्वथा॥ ८४॥ तैसेयज्ञमंडपासहितविप्र॥ र
 द्योतमेरक्षितेसाचार॥ पुर्णजातामस्वसमप्र॥ श्रीरघुविरप्रतापे॥ ८५॥ विश्वामित्राशि
 नावरेप्रेम॥ ह्यणवछामाशियाश्रीराम॥ सहस्रवदनातुष्टिप्रहिमा॥ नवर्णवेचिसर्वथा
 ॥ ८६॥ कैशिकाशिह्यैतिऋषिजन॥ श्रीरामपुतिधाकुटिसाठण॥ पर्वताकारराक्षससं
 क्हासना॥ कैसेक्षणमात्रेणकिले॥ ८७॥ विश्वामित्रहस्यवदन॥ ऋषिसदेतप्रतिवचन॥ ह्य
 णजदित्यमंडकिंदिसेलाहान॥ परिपृथ्ववरिप्रकाश॥ ८८॥ धाकुटदिसेकलशोड्ढव॥ परि
 उद्दरिसाटवलाजकार्णव॥ किवामनरुपधरिकेशव॥ परिदोनपांडवक्षाउकेले॥ ८९॥ दिसे
 र्द्राचिवजलाहान॥ परिकेलेपर्वतांनेवहुचुर्ण॥ पौंडिसहृदईबुधीदिसेसान॥ आब्रह्मसु

(४)

॥७॥

वन व्यपिंते ॥१०॥ ते सारामथा कुटादि से तुह्रा ॥ पीरब्रह्मादिको न के के महिमा ॥ पुराण पुरुष हाप
रमात्मा ॥ भक्त रक्षणा अवतरका ॥११॥ असो भुता व किया तब्बा तेथ ॥ तेहिं भक्षितिराक्ष सत्रेते ॥
यज्ञमंडपा भोंवते ॥ शुध के ले भुमंडक ॥१२॥ तों जाले मिथु के श्वरा चें पत्रा ॥ तें स्वये वा वि विश्वामि
त्रा ॥ सवे घे उनि समस्त विप्र ॥ सैवरा ता गि ये ई जे ॥१३॥ ते दिवशि बहुत सोहळा ॥ सिध्दाश्र
मि कौशिके के ला ॥ ब्राह्मण भोजन जालिया सकं ॥ वस्त्रें अठं कार दिधलां ॥१४॥ जेथें
साह्य श्री राम आपण ॥ तेथें काहिन दिसे अ पूर्ण ॥ बहुत दक्षणा दे उनि ब्राह्मण ॥ विश्वामि
त्रे तोष विले ॥१५॥ असो जालिया ते कं रजनि ॥ कौशिक निजे ला स्व सदनि ॥ राम लक्ष्म
ण पुढे घे उना ॥ सुखें करनि प्रौटला ॥१६॥ साक्षां त शेष नारायण ॥ कौशिक निजे ला पुढे घे ॥७॥
उना ॥ निज्ञान के ते समाधि पूर्ण ॥ उमनि वां वा कुनिटा कवि ॥१७॥ हृदई धरनि निज्ञकांता ॥

४५

शे जे निजति जेतव ता ॥ मजगमे जै संपाहाती ॥ केवळ पशुपडियेले ॥ १८ ॥ राम स्मरणे वि
 ण भोजन ॥ जै सें भस्मीचा तेलें अवदान ॥ जेय जपुसपासन के अर्पण ॥ धर्म तो विअ धर्म जाणि
 जे ॥ १९ ॥ सम प्राप्ति विण देख ॥ नाशितिकुश मुलिका उदक ॥ तरिते पिशाचें नरवोळख ॥ भुल
 ले मुर्ख जाणिजे ॥ २० ॥ श्रीराम प्राप्ति विण जाव ॥ याचें नाव अज्ञान ॥ विद्या त्याच अविद्या पु
 ण ॥ धर्म तो अर्थ मजाणिजे ॥ २१ ॥ असो धर्म धर्म भाग्ये कोशिकाचें ॥ पुढें घेउन निधान वैकु
 ण्ठिचें ॥ घेउन प्रौढ कासाच ॥ नाहि चित्तें वास्तव्य ॥ २२ ॥ निद्रापडिलि जारषी सनिश्चिती ॥
 तो जागे जाले दोघेदा शरथि ॥ श्रीराम ह्ये सो मित्रा प्रति ॥ परिये शिये कजिव लगा ॥ २३ ॥
 आदिक थिं जाउ जयो ध्ये शि ॥ पाहुद शरथाचा वदन शशि ॥ बोलता श्रीरामाच्या लोच
 नाशि ॥ अभुआले ते धवां ॥ २४ ॥ तो जागा जाका गांधिसुत ॥ दोघाच्या गोष्टि असे अकता ॥

9

॥८॥

कुंरकुंदोतिबोलेरघुनाथ॥ श्रीदशरथदेखांकधि॥ ५॥ सककरायांचेमुगुटयेकसरिं॥ नमस्का
रकरितातजवसरिं॥ पडतिदशरथाच्याप्रपदावरि॥ किंकिंपडलिं-चरणितेणे॥ ६॥ लेचरण
मिकधिदेखेन॥ दशरथाच्यापादुकायेउन॥ दिव्यरत्नीमंडित्पुर्ण॥ मिटाकेनउभाकधि॥ ७॥
जेजयोध्यापतिचिपहराणि॥ कौशल्याजामुविजननि॥ लेजत्यंतछशहोउनि॥ वाटपा
हतजसेल॥ ८॥ जैसेविश्वामित्रंजेकितें॥ उठविरामाशिहृदईंधीरें॥ क्षणेवारेजन
का॥ चेंपत्रआले॥ उदैकजाउमिथुकेशि॥ शान्तेथेंकेवठविजईंशिता॥ तेलुजघालिलमा
करघुनाथा॥ कौशल्यासहितदशरथा॥ तयचनुजभेटविना॥ ९॥ तुंजगद्गुररामचंद्र॥ द
विशिलोकलिळाचरित्र॥ असोउदयाचकिंप्रघटेरविचक्र॥ सारितिविप्रनित्यनेमा॥ १०॥
येउनिऋषेश्वरांचेभार॥ श्रीरामजाणिसौमित्र॥ निघताजाणविश्वामित्र॥ मिथुळापंथेंतेकाकि॥ ११॥

॥८॥

चरणचालि ऋषिचालति ॥ क्षणो निरथटाको निरद्युपति ॥ चरणिचालतां जगति ॥ धन्य ज्ञान्ये
 स्रण तसे ॥ १३ ॥ दोहिं बाहिं रुषिआणि सौमित्र ॥ मध्ये जगदं चराजिवनेत्र ॥ जो घनशामच्या
 गात्रा ॥ कैसा शोभला ते कार्कि ॥ १४ ॥ पुर्विमथा वयाद्विरसमुद्रा ॥ निघाला जे कां क्षिराब्धीवर ॥
 ते कां ब्रह्मा आणितु मावर ॥ दोहिं भागि शोभले जे वि ॥ १५ ॥ किशिशिमंडळ दे भागि लखल
 खित ॥ शोभति भगुत नय अंगिरा सुत ॥ किशखचक्रविराजता ॥ श्रिविष्णु संदोहिं भागि
 ॥ १६ ॥ असो बैसाचालि कारधुनाथ ॥ शिवायु लाले आश्रमदा वित ॥ ठाई ठाई बैसा नि
 रधुनाथ ॥ पुजा करिति आदरे ॥ १७ ॥ समस्तांचा करित उध्धार ॥ पुढे जात जगदो ध्धार ॥ पुढे
 चंड शिळा ते दुर्घर ॥ दिष्टि देखिलि राघवें ॥ १८ ॥ रामचरण रजते वेळे ॥ वायुसंगें पुढे धां व
 ले ॥ शिके वरि जाउन बैसले ॥ नवल जाठे अद्भुत ॥ १९ ॥ अहिल्ये शिके शिळा विले चरण ॥

जैसे वणि कवि जन ॥ तरि अहिन्सा कैं न्या ब्रह्म कन्या पुर्ण ॥ गौतमा चि नि जप बलि ॥ २० ॥ ब्रा
 ह्मण पत्नि ते माहा सति ॥ तिस पाय ल विरचु पति ॥ हेन घडे चि निश्चि ति ॥ बर वें सं ति वि
 चरि जे ॥ २१ ॥ असो चरण रज ते वेळ ॥ कां पौ ला गलि चं उ शि का ॥ विश्वा मित्रा प्रति धन सां
 वळ ॥ पुस ला जाला रत्ना ॥ २२ ॥ ह्ये र पि हें न व ल व र्त ल ॥ धर थ रं शि का कां कां प त ॥
 जैसा चंद्रो दय हू कु हू कु हो त ॥ दि व र स य दि से स्त्रि ये ॥ २३ ॥ पर म सौ भा ग्य व लि धु मा ध
 र ॥ जे चं य क वर्ण स कु मार गौर ॥ रं भा उ व सि ह्य ण ति सुं द र ॥ परि ई ज व रो नि वो वा कि
 जे ॥ २४ ॥ म स्त कि चेर क ति केश भा र ॥ व क ले व क षि त सुं द र ॥ म ज वा र ति ई द्र दि सुर
 व र ॥ इ चे पो टि ज न्म ले ॥ २५ ॥ कि हे आ दि भ वा नि सा चा र ॥ आ ह्वा स जा लि सा मो र ॥
 कि को णि ऋ षि प लि सुं द र ॥ नि दा घे उ नि उ टि लि ॥ २६ ॥ कि य टि लि हो ति मु र्छा ये उ न ॥

ना

108

किंनिषलि पाँकिं हुनि ॥ किंकोणिरा किलिवधुनि ॥ प्राणयेउनिउरि लिआतो ॥ २७ ॥ किंको
 णिकेले शासन ॥ बेसलि होतिर सोन ॥ किंतुमचितपक्रियासंपुर्ण ॥ येणेरूपंआकारलि ॥ २८ ॥
 मगविश्वामित्रहृणेरालिवनेत्रा ॥ हेब्रह्मकन्यापरमपवित्रा ॥ पतिनेंआपितो मदनारिभि
 त्रा ॥ शिळारूपजाकीहे ॥ २९ ॥ श्रीरामहृणमाहुरधि ॥ अहिल्याशिळाआलिकैशि ॥ तो
 दलांतमज्ञपाशिं ॥ छयाकरुनिसागिने ॥ ३० ॥ रुषिहृणविरंचिनेब्रह्मांडरचिके ॥ चि
 त्रविचित्ररूपविस्तारले ॥ सकळमाडिविशवकेले ॥ अहिभ्रंशरूपे ॥ ३१ ॥ देखोनिपर
 मसुंदर ॥ तिसमागोयेतिबहुतवर ॥ कमळाइवाशिपडलाविचार ॥ सैवरथोरअरंभिके
 ॥ ३२ ॥ ब्रह्माबोलताजाठाआपण ॥ दोंप्रहरांसपृथ्विप्रदक्षणाकरुन ॥ येईलपुढंपुर्ण ॥
 त्यासदेईनअहिल्या ॥ ३३ ॥ जैकोनिजैशियापणाशि ॥ धांवोलागेलदेवरुषि ॥ यक्षग

(11)

॥१०॥

पाणधर्वतापसि॥ पृथ्विप्रदक्षणेशिचाकिले॥३५॥ त्यांत अवस्थापुटे अमरपति॥ अत्रावता
रुढथांबेशिघ्रगति॥ इतर लोकपाळहिथांबति॥ वहनिवैसोनिवापुळा॥३५॥ येकउध्व
पंथेजाति॥ येकसमिरगतिभुमिवरथांबति॥ येकमार्गीआउखकोनिपडति॥ सेवेचिपळ
तिउयेनियं॥३५॥ ईकडेतांगैतममुनि॥ साह्वितस्नानकरनि॥ बाहेरयेतांनयनि॥
दिमुखिकपिलादेखिलि॥३६॥ गायत्रिसंज्ञपान॥ विधियुक्तप्रदक्षणाकेळातिना॥
सावरिनिलैकअनुष्ठान॥ गौतमेकेलेसावकाश॥३७॥ सत्यलोकाशिवालापरतोना॥
ज्ञानियाहेकमकासन॥ तांप्रदक्षणाकरनितीना॥ कर्शनिवालागौतममुनि॥३८॥ विधिह्र
णथन्यजाते॥ अहिअंभेभाय्यफळले॥ तात्काळदेघांशिलग्नलाविले॥ यथाविधि ॥१०॥
पाणिग्रहण॥४०॥ तांअवस्थापुटेअमरपति॥ थांबतवालाशिघ्रगति॥ वधुवरंदेखोनियांचिति॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com